मूल्य : एक प्रति 0.50 रु.
वार्षिक 5.00 रु.

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

उत्तर - साक्षरताकर्मियों के लिए

नवंबर, 2008 वर्ष 13, अंक 11

ताजमहल

आगरा को ताज की भूमि कहते हैं। दिल्ली के बाद यही नगर मुगल सल्तनत का शाही शहर बना, इसमें कई इमारतें, यादगार स्मारक हैं और इनमें ताजमहल विशेष रूप से अतिसुंदर, शानदार और पवित्र इमारत है जो संग-ए-मरमर से बनी है, इसमें मुमताज महल की कब्र है, असली कब्र नीचे है और उसका तावीज (ईंटों या पत्थर से बना कब्र का निशान) बनाया गया है। शाहजहां बादशाह को भी इसी में मुमताज महल की कब्र के बराबर में दफ न किया गया था। इन कब्रों पर सुंदर नक्काशी की गई है जिन पर बहुमूल्य पत्थर जड़े हुए हैं, उन पर बारीक जालियां काटी गई हैं वह भी बहुत ही हैरत में डालने वाली हैं।

शाहजहां को शहजाद-ए-तामीर (निर्माण का राजकुमार) कहा जाता था। इसका बड़ा कारण ताजमहल ही है। वैसे इसकी बनवाई हुई इमारतों में लाल किला और दिल्ली की जामा मस्जिद भी शामिल हैं।

ताजमहल यमुना के किनारे एक सुंदर सपने की तरह मौजूद है। इसकी मेहराबों पर कुरआन-ए-पाक की आयतें (कुरआन शरीफ की लाइनें) अति सुंदर ख्याती के साथ लिखी हुई हैं। असल इमारत के सामने बगीचे हैं और दोनों किनारों पर कुछ और छोटी-छोटी इमारतें हैं। ताजमहल की अपनी निर्माण की सुंदरता और कारीगरी के हिसाब से संसार के सात अजूबों में इसकी गिनती होती है।

कुतुब मीनार

कुतुब मीनार जिसे कुतुब की लॉट भी कहते हैं। यह भी मुगल काल की बहुत ही शानदार और मजबूत इमारत है, इसके बाहर की ओर पत्थर तराशने के जो नमूने मिलते हैं, उनमें हर प्रकार के बेलबूटे और फूल-पत्ते भी हैं और पवित्र कुरआन की आयतें (कुरआन शरीफ की लाइनें) भी। यह इमारत पांच तल ऊंची है। हर तल पर सीढ़ी से निकलकर बाहर की सैर करने के लिए गोल छज्जे और छोटे-छोटे दरवाजे बने हैं। अंदर की सीढ़ियां पेचदार हैं जो बलखाती हुई नीचे से ऊपर जाती हैं। पर्यटक पहले सीढ़ियों से मीनार को देखने जाते थे परंतु अब जीने बंद कर दिए गए हैं। इसके ऊपर की बुर्जी किसी भूकंप में गिर गई थी जो पास ही में रखी हुई है। भारत की यह सबसे ऊंची मीनार कुतुबद्दीन एबक के काल में बननी शुरू हुई और सुल्तान शम्सुद्दीन इल्तुत्मिश के समय में इसका निर्माण पूरा हुआ। इतनी ऊंची कोई इमारत इतनी छोटी-सी नींव पर निर्मित नहीं की जा सकती। ऐसा मालूम होता है कि इसकी बुनियादें बहुत गहरी हैं इनका फैलाव अधिक नहीं है। इसकी सुंदरता प्रकट करने के लिए अधिकतर लाल पत्थर ही से काम किया गया है। लेकिन लाल पत्थरों की तख्तियों के नीचे ऐसे पत्थर भी मौजूद हैं जिनको खारा पत्थर (नीले रंग के पत्थर) कहा जाता है और उन्हीं से यह इमारत भी बनी है। इसमें बनाते समय वह पत्थर भी प्रयोग हुए थे जिन पर मूर्तियां बनी हुई थीं परंतु इसके बाहर कोई निशानी या खुदाई नहीं मिलती। कुरआन की आयतें अपने लिखावट के अंदाज एवं तराश-खराश के हिसाब से बहुत असाधारण हैं।

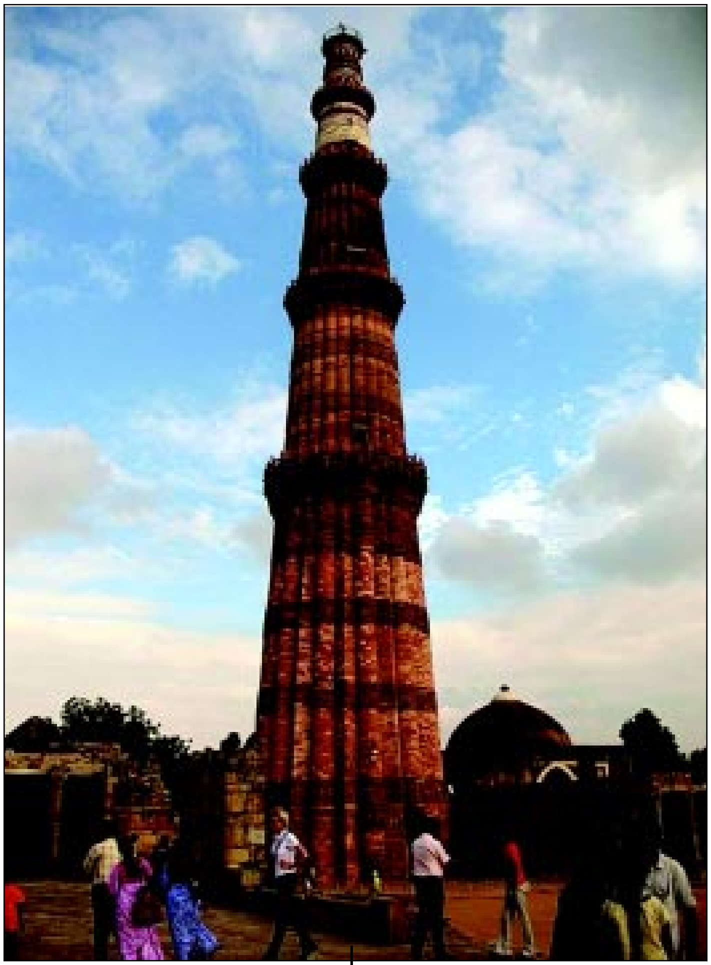

इसके पास बहुत से ऐतिहासिक इमारतों के अवशेष मिलते हैं जिनमें इलाई दरवाजा भी है, यह इलाई दरवाजा अपनी मेहराब की सुंदरता और उन बेलबूटों के लिए प्रसिद्ध है जो इसके इर्द-गिर्द रंगीन पत्थरों के रूप में लगाए गए हैं, जिससे इस दरवाजे की सुंदरता बढ़ जाती है।

*ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित पुस्तक **'हमारे ऐतिहासिक स्मारक'** का अंश*

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
और उसकी गतिविधियों तथा प्रकाशनों के बारे में
विस्तृत जानकारी के लिए अवलोकन करें :
वेबसाइट : www.nbtindia.org.in

नवसाक्षरों के लिए पुस्तकें

हर विषय की पुस्तकें
अपनी भाषा में रोचक, ज्ञानवर्धक पुस्तकों का
सूची-पत्र मंगवाने के लिए आज ही निम्नलिखित पते पर संपर्क करें

प्रबंधक (विक्रय एवं विपणन)
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई (1835-1858)

16 नवंबर सन् 1835 को लक्ष्मीबाई का जन्म हुआ। झांसी मध्य भारत में है। उस समय उस प्रदेश का नाम बुंदेलखंड था। डलहौजी नाम का फिरंगी उस समय भारत का गवर्नर जनरल था। अगर किसी राजा की संतान न हो तो वह किसी लड़के को गोद लेगा। वही दत्तक पुत्र अगला राजा होगा। यही प्रथा थी। डलहौजी ने इस प्रथा का विरोध किया। उसने एलान किया कि ऐसे निस्संतान राजा का राज्य अंग्रेजी हुकूमत के अधीन होगा। इस तरह उसने भारत के कई राज्यों को कंपनी शासन के अधीन कर लिया था।

सन् 1842 में झांसी के राजा गंगाधर राव से लक्ष्मीबाई का विवाह हुआ। समय पर पुत्र न होने से वे तीर्थ यात्रा पर गए। एक बच्चा पैदा होकर मर गया। राजा भी बीमार पड़ गए। फिर आनंद राव नाम के बच्चे को गोद ले लिया। जब लक्ष्मीबाई केवल 18 वर्ष की थीं, राजा गंगाधार राव की मृत्यु हो गई। तुरंत झांसी में स्थित अंग्रेजों के प्रतिनिधि (रेजिडेंट) ने एलान किया कि झांसी अंग्रेजों के अधीन है। फिर खजाने को बंद करके मुहर लगा दी। उन्होंने अपनी सेना को तैयार रखा और आज्ञा दी—

'रानी किले से बाहर आएं और उन्हें दी गई छोटी-सी धनराशि को स्वीकार करें। उन्हें राज्य करने का अधिकार नहीं है।'

रानी का दत्तक पुत्र अभी छोटा था। बचपन में ही पुरुषों की तरह लक्ष्मीबाई ने भी घुड़सवारी, तीर-कमान, तलवार चलाने आदि का अभ्यास किया था।

1857 में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध क्रांति हुई। हिंदुस्तानी सिपाहियों वाली फौज में विद्रोह छिड़ गया। वही स्वतंत्रता संग्राम था। जिसे सैनिक विद्रोह भी कहा गया था।

रानी लक्ष्मीबाई ने पुरुष वेश धारण किया और फिरंगी सेना से भिड़ गईं। वीर तात्या टोपे रानी के मित्र थे। उन्होंने भी सेना एकत्र करके रानी की मदद की। वे आखिर तक युद्ध का सामना नहीं कर सकीं इसलिए भेष बदलकर दत्तक पुत्र के साथ बचकर निकल गईं।

उस समय ग्वालियर में सिंधिया का राज्य था। वे चाहते तो रानी की मदद कर सकते थे किंतु वे अंग्रेजों के पक्ष में थे। वे ग्वालियर छोड़कर आगरा भाग गए। रानी ने ग्वालियर का किला हथिया लेना चाहा और बड़ी वीरता से लड़ती रहीं।

झांसी की रानी का साहस देख अंग्रेज चकित थे। शत्रु के व्यूह को तोड़कर क्रांति सेना आगे बढ़ती रही। उनकी तोप सेना रानी को रोकती रही। जिस घोड़े पर रानी सवार थीं वह ग्वालियर सेना का था। वह घोड़ा विद्रोही निकला और उसने रानी को आगे नहीं बढ़ने दिया। चारों ओर घूम-घूमकर रानी तलवार चलाती रहीं, शत्रुओं को काटकर गिराती रहीं। तब पीछे से एक शत्रु ने उनके सिर पर वार किया। सिर के बाईं तरफ से खून बहने लगा। वीरांगना रानी तब भी लड़ती रहीं। दूसरे सिपाही ने उनकी छाती पर वार किया। उस दशा में भी रानी ने उस सिपाही को मार गिराया।

रानी समझ गईं कि उनका अंत निकट आ गया है। उनकी देह फिरंगियों के हाथ न लगे, यह बात पहले ही उन्होंने अपने साथियों से कह दी थी। इसलिए उनके साथी उन्हें घायल अवस्था में पास की झोपड़ी में ले गए। वहीं उन्होंने अपने प्राण त्याग दिए। सन् 1858 में उस वीर नारी ने देश के लिए अपना बलिदान दिया। फिरंगी सेनापति ह्यूरोज ने रानी की वीरता की प्रशंसा कर स्वर्ण अक्षरों में लिखवाया—"झांसी की रानी की कीर्ति और वीरता अमर है।"

ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित पुस्तक ***'भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाएं'*** *का अंश*

मिट्टी की सास

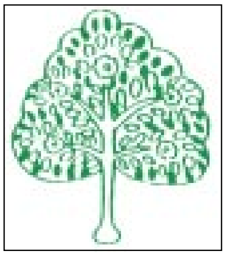

बहुत समय पहले की बात है, एक आज्ञाकारी बहू थी। सास की छोटी से छोटी इच्छा पूरी करने को वह हमेशा तत्पर रहती थी। सास की गरिमा का ध्यान रखते हुए बुढ़िया बहुत कम बोलती थी। ज्यादातर तो वह इशारों से ही काम चला लेती थी। हर सुबह बहू सास के पास जाती और पूछती कि आज कितना चावल पकेगा। बुढ़िया कुछ देर समस्या पर गहराई से विचार करती और फिर धीरे से एक हाथ ऊपर उठाती। हाथ ऊपर उठाकर कभी वह दो अंगुलियां दिखाती कभी तीन जैसी उसकी मरजी होती। बहू उसके आदेश को सर झुकाकर स्वीकार करती और झुर्रीदार हाथ के निर्देश के अनुसार दो या तीन कटोरी चावल पकाने के लिए रसोई में चली जाती।

एक दिन सास बीमार पड़ी और मर गई। जवान बहू रो-रो कर हलकान हो गई। सास का साया उठ जाने से उसे कुछ समझ नहीं पड़ रहा था कि अपनी छोटी-सी गृहस्थी वह कैसे चलाए। अब वह किससे पूछे कि आज कितना चावल बनेगा? वह रात-दिन आशंका से घिरी रहती और कोई निर्णय नहीं कर पाती थी। पति उसकी सास भक्ति देखकर फूला नहीं समाता था। पर रोजाना उसके इस सवाल का जवाब देते-देते कि आज कितना चावल बनेगा पति कुछ ही दिनों में परेशान हो गया।

रोज-रोज के इस झंझट से छुटकारा पाने के लिए पति ने एक तरकीब सोची। वह कुम्हार के पास गया और उससे अपनी मां की आदमकद मूर्ति बनाने को कहा। उसने कुम्हार को खासतौर पर यह हिदायत दी कि मूर्ति के एक हाथ की दो अंगुलियां ऊपर उठी हों और दूसरे की तीन। कुछ ही दिनों मे मूर्ति को रंग दिया और कपड़े पहना दिए। पति मूर्ति को घर लाया और उसे ऐसे स्थान पर रखा जहां से वह पत्नी को रसोई में से देखती रहे। सास को वापस पाकर बहू की खुशी का ठिकाना न रहा। उसकी सारी परेशानियां दूर हो गईं। जब भी उसे चावल की मात्रा के बारे में शंका होती वह रसोई से बाहर देखती और ओदश ले लेती। दो अंगुलियों वाला हाथ पहले दिखता तो वह दो कटोरी चावल पकाती और तीन अंगुलियों वाले हाथ की झलक दिखती तो तीन कटोरी। उस दिन भात हांडी में समाता नहीं था। बहू मिट्टी की सास पाकर खुश थी और पति पत्नी को खुश देखकर खुश था।

पर यह खुशी अधिक दिन नहीं चली। एक रोज पति को पता चला कि चावल की बोरी कुछ ही हफ्तों में खत्म हो जाती है जबकि खाने वाले पति-पत्नी दो ही हैं। उसने पत्नी से पूछा तो उसने बताया कि वह रोजाना सास से पूछती है और उसके आदेश का पालन करती है। पति को आग लग गई, ''दो जन के लिए दो-तीन कटोरी चावल? तुम्हारी अक्ल घास चरने गई है? हम इतना भात नहीं खा सकते। बोलो, खा सकते हैं? जब मां जिंदा थी तब भी तुम दो कटोरी चावल पकाती थी और वह भी हमसे खाया नहीं जाता था।'' पत्नी ने हौले से जवाब दिया, ''हम दो नहीं, तीन हैं। तुम अपनी मां को भूल रहे हो। मैं अब भी उन्हें खिलाकर ही खाती हूं। अक्सर तो मेरे लिए थोड़ा ही बचता है। तुम बुरा मत मानन, तुम्हारी मां की खुराक पहले से बढ़ गई है।''

पति को अपने कानों पर भरोसा नहीं हुआ। कैसी बेवकूफी की बात है कि मिट्टी की मूर्ति कई बोरी चावल चट कर गई! आपे से बाहर होकर उसने पत्नी की धुनाई कर डाली। उसने उसे और उसकी मिट्टी की सास दोनों को घर से निकाल दिया।

दरअसल हुआ यह कि वह रिवाज के मुताबिक दोनों वक्त सास के आगे पत्तल रखती और एक-एक वह सब परोसती जो घर में बना होता। खाना परोसकर जैसे ही वह रसोई में जाती उसकी पड़ोसन दीवार में बहुत होशियारी से बनाए सूराख से दबे पांव आती और पत्तल का खाना लेकर उसी रास्ते से वापस चली जाती। इस तरह वह खुद खाना बनाने से बच जाती। जबकि बेचारी बहू यह सोचती कि उसकी सास पहले की तरह अब भी खाना खाती है। उसकी नादानी ने उसे घर से बेघर कर दिया।

उसके दुख का पार न था। अपनी प्यारी सास का पुतला बांहों में उठाए हुए वह रोती-बिलखती, प्रार्थना करती, अपने भाग्य को कोसती और डर के मारे संज्ञाशून्य-सी रात के अंधेरे में नाक की सीध में चलती रही। चलते-चलते वह गांव के बाहर जंगल में पहुंच गई। भयंकर अंधेरे में वह थर-थर कांपने लगी। सास को उसने कसकर छाती से चिपका लिया। हलकी-सी आहट से ही उसके रोएं खड़े हो जाते। बेचारी आज से पहले घर से बाहर ही बहुत कम निकली थी। जैसे-तैसे वह एक पेड़ पर चढ़ी और डाली के साथ खुद को साड़ी से बांध लिया। सास को उसने एक पल भी अपने से अलग नहीं किया। भय के कारण वह पसीने से नहा गई। थोड़ी देर बाद उसने किसी के चलने की आवाज सुनी। बड़ी-बड़ी मूंछों वाले कुछ लोग हाथों में जलती हुई मशालें लिए झाड़ियों के बीच से उसी की ओर आ रहे थे। उनके खूंखार चेहरों और पहनावे से उसने अंदाजा लगाया कि वे चोर हैं। वे सीधे उस पेड़ के नीचे आए जहां वह छुपी हुई थी। थकान से चूर चोरों ने पीठ का बोझ नीचे रखा और चोरी के माल का बंटवारा करने लगे। मशालों की रोशनी में वे उसे साक्षात राक्षस लग रहे थे। बेचारी अबला नारी पीपल के पत्ते की तरह कांपने लगी। सास पर उसकी पकड़ ढीली हो गई। मिट्टी की मूर्ति जोरदार आवाज के साथ चोरों के ऊपर जा गिरी।

डर से चारों की रुह कांप गई और वे दुम दबाकर भाग खड़े हुए। किसी ने पीछे मुड़कर भी नहीं देखा कि हुआ क्या। बहू भय से अचेत हो गई।

सुबह होश आने पर उसने देखा कि मिट्टी की सास के तीन टुकड़े हो गए हैं और उसके आस-पास सोने, हीरे, मोती, लाल माणिक आदि के ढेर लगे हैं। पास ही कुछ बुझी हुई मशालें पड़ी थीं। यह भरोसा होने पर कि आस-पास कोई नहीं है वह संभलकर नीचे उतरी और सास की मूर्ति के टुकड़ों को एक जगह इकट्ठा किया। उसकी जान बचाने और अनमोल खजाने के लिए उसने सास का बहुत-बहुत एहसान माना।

एक हाथ में टूटी हुई मूर्ति और दूसरे में भारी गठरी उठाए हुए वह घर गई और कुंडी खटखटाई। उसे देखकर पति का गुस्सा फिर भड़क उठा। वापस आने के लिए उसने उसे बहुत सुनाया। फिर गठरी के अनमोल खजाने के बारे में जानकर उसने उसे तुरंत खींचकर भीतर कर लिया और पूरा किस्सा सुना। गठरी के सोने और जवाहरात को देखकर उसकी आंखें ललाट में चढ़ गईं। खजाने को संदूक में रखकर वह पत्नी की बताई जगह पर जंगल में गया और बचे हुए माल को बांधकर घर ले आया। किसी को कानोंकान खबर नहीं हुई। अब उसके पास इतना धन था जितना छोटे-मोटे राजाओं के पास भी क्या होगा!

दरवाजा भीतर से बंद करके उसने फर्श पर सारा खजाना फैलाया और हर चीज की अलग-अलग ढेरियां बनाईं। वह जानना चाहता था कि किस चीज की कितनी मात्रा है। उसने पत्नी को पड़ोस से मापने का बड़ा बरतन लाने को कहा। उसे सख्त हिदायत दी कि क्या मापना है इसके बारे में किसी से कुछ न कहे।

पड़ोसन अपनी उत्कंठा दबा न सकी कि ये कंगले इतने बड़े मापने के बरतन का क्या करेंगे। पर बहू ने होंठ सी लिए। सो पड़ोसन ने मापने का बरतन उसे देने से पहले उसके पेंदे में इमली का टुकड़ा चिपका दिया। मापने का बरतन वापस लौटाया गया तो पड़ोसन और उसका पति यह देखकर दंग रह गए कि बरतन के पेंदे में इमली पर एक बेशकीमती रत्न चिपका हुआ है। उन्होंने बहुत माथा लड़ाया, कल्पना के घोड़े दौड़ाए और हर उस तरीके पर विचार किया जिससे कल के फटेहाल पड़ोसियों ने इतना धन जमा कर लिया कि जिसे मापने के लिए मापने के बरतन की जरूरत पड़े, पर व्यर्थ रहस्य रहस्य ही बना रहा। पहला अवसर मिलते ही पड़ोसन ने बहू पर प्रश्नों की बौछार कर दी। भोली बहू ने फुसफुसाते हुए (बार-बार यह कहते हुए कि किसी से कहना मत) उस रोमांचक रात की लोमहर्षक घटना बता दी कि कैसे पति ने उसे घर से बाहर निकाला, कैसे डर से उसकी जान निकली जा रही थी, कैसे उसने पेड़ पर आश्रय लिया और कैसे उसे इतना धन मिला। अंत में उसने कहा कि यह सब उसकी सास का प्रताप है।

चतुर पड़ोसन उसकी सास की एक-एक रग जानती थी। वह कैसे इस वाहियात बात पर भरोसा करती? उसके

पति ने सोचा कि रातोंरात भाग्य संवारने का यह आसान रास्ता है। उसने भी मिट्टी की एक मूर्ति बनवाई, उसे पत्नी के हवाले किया और उसे जंगल में छोड़ आया। उसने पत्नी से साफ कह दिया कि पड़ोस की बेवकूफ बहू जितना धन लाए बिना वह उसे घर में नहीं घुसने देगा।

पड़ोसन को अपने पर पूरा भरोसा था। जैसी कि उम्मीद थी वे ही चोर मशालें लिए हुए उस दिन के माल को बांटने के लिए उसी पेड़ के नीचे आए। जैसे ही उन्होंने गठरियां खोली पड़ोसन ने पेड़ से उन पर मूर्ति फेंक दी। भयंकर धमाका हुआ। चोर भाग खड़े हुए। पर इस बार वे बहुत दूर नहीं गए। उन्हें शक हुआ। पिछली बार वे कतई अनजान थे, पर फिर वैसी ही आवाज हुई तो उन्होंने जानना चाहा कि धमाके की वजह क्या है। वे पेड़ों के पीछे छुपकर देखने लगे। थोड़ी देर बाद एक औरत पेड़ से उतरी और उनके चोरी के माल को समेटने लगी। गुस्से से लाल-पीले होते और उसे गालियां देते हुए वे चारों तरफ से उसकी ओर दौड़े। पिछली बार उनके माल को हड़पने के लिए उन्होंने उसे बहुत बुरा-भला कहा और उस पर पिल पड़े। पड़ोसन को कुछ कहने का मौका ही नहीं मिला। उसके बेहोश होने तक वे उसे मारते रहे और पेड़ से बांधकर चले गए।

अगले दिन उसका पति आया। वह भय से विक्षिप्त-सी हो गई थी। धन की लालसा में उसकी ऐसी दुर्गति हुई और कानी कौड़ी भी हाथ नहीं लगी।

*ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित पुस्तक '**भारत की लोक कथाएं**' का अंश*

पाठक मंच बुलेटिन

बच्चों की द्विभाषी पत्रिका

वार्षिक शुल्क : रु. 50.00

संपर्क करें :

संपादक, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II

वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

पाठकीय प्रतिक्रिया

- 'साक्षरता संवाद' सितंबर, 2008 का अंक प्राप्त हुआ। अंक की प्रधान रचना, 'मेले की माया' बहुत-बहुत भाई। कथा सामग्री नवसाक्षरों की प्रकृति एवं मनोदशा और मानसिकता के अनुकूल है तथा भाषा एवं विकास भी स्वाभाविक है। इसका शीर्षक "मेले की माया" भी सांकेतिक, एवं सार्थक है। कहानी उपयोगी तो है ही, कुल मिलाकर रचना प्रेरणादायक है।

  ओम प्रकाश 'मंजुल', पूरनपुर (उ. प्र.)

- पत्रिका बराबर मिल रही है। देख-पढ़कर किसी सुपात्र को दे देता हूं, पढ़ने के लिए। ऐसा दूसरों को भी करना चाहिए।

  सन्त कुमार टण्डन 'रसिक', इलाहाबाद

- हर महीने घर में आता
  साक्षरता संवाद
  घर के लोगों को भाता
  साक्षरता संवाद
  साक्षरता का पाठ पढ़ाता
  साक्षरता संवाद
  ज्ञान के मन में दीप जलाता
  साक्षरता संवाद
  कविता कहानी से मन खुश कर जाता
  साक्षरता संवाद
  नई नई पुस्तकों की जानकारी देता
  साक्षरता संवाद
  पुस्तकें पढ़ने की आदत डालता
  साक्षरता संवाद
  मन में ज्ञान की अलख जगाता
  साक्षरता संवाद
  नवसाक्षरों को साक्षर बनाता
  साक्षरता संवाद

  बद्री प्रसाद वर्मा 'अनजान', गोलाबाजार, गोरखपुर

- आपके द्वारा प्रेषित 'साक्षरता संवाद' मुझे नियमित रूप से प्राप्त हो रहा है। उसी के द्वारा मुझे ज्ञात हुआ है कि 'नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया' नवसाक्षरों के लिए पुस्तकें प्रकाशित करने में निरंतर सक्रिय है।

  आभा श्रीवास्तव, लखनऊ

चांद का हठ

रामधारी सिंह 'दिनकर'

*यह वर्ष राष्ट्रकवि **रामधारी सिंह 'दिनकर'** का शताब्दी वर्ष है। हिन्दी बाल साहित्य में भी दिनकर ने अपनी अमिट छाप छोड़ी है। उनकी सिर्फ एक कविता **'चांद का कुरता'** ही उन्हें हिन्दी बाल कविता के इतिहास में अमर बनाने के लिए काफी है। ट्रस्ट की ओर से दिनकर जी की स्मृति को प्रणाम करते हुए उनकी अमर कविता प्रस्तुत है।*

हठ कर बैठा चांद एक दिन
माता से यह बोला
सिलवा दो मां मुझे ऊन का
मोटा एक झिंगोला

सन-सन चलती हवा रात भर
जाड़े में मरता हूं
ठिठुर-ठिठुर कर किसी तरह
यात्रा पूरी करता हूं।

आसमान का सफर और यह
मौसम है जाड़े का
न हो अगर तो ला दो कुर्ता ही
कोई भाड़े का

बच्चे की सुन बात
कहा माता ने अरे सलौने
कुशल करे भगवान
लगे मत तुझको जादू टोने

जाड़े की तो बात ठीक है
पर मैं तो डरती हूं
एक नाम में कभी नहीं
तुझको देखा करती हूं।

कभी एक अंगुल भर छोटा
कभी एक फुट मोटा
बड़ा किसी दिन हो जाता है
और किसी दिन छोटा

घटता-बढ़ता रोज किसी दिन
ऐसा भी करता है
नहीं किसी की आंखों को तू
दिखलाई पड़ता है

अब तू ही यह बता
नाप तेरा किस रोज लिवाएं?
सीं दें एक झिंगोला
जो हर रोज बदन में आए?

R. N.I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL (SW) 1/4078/06-08
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2006-08
Mailing date 25/26

अपना कौन?

चतरसिंह 'लुप्त' पारसौली

एक महात्मा का नियम था कि वे केवल उस व्यक्ति के घर खाना खाता था जिसकी नेक कमाई होती थी तथा जो सत्य बोलता था। एक नगर में प्रवेश करते समय उसने एक व्यक्ति से पूछा, ''इस नगर में नेक कमाई वाला धनी और सच्चा व्यक्ति कौन है?''

''सेठ सतवीर धनी और सच्चा नेक कमाई वाला है। उसके चार पुत्र और एक लाख रुपया पास है।'' नगर के व्यक्ति ने उत्तर दिया।

महात्मा ने सेठ सतवीर का द्वार जा खटखटाया। सेठ सतवीर ने द्वार खोल महात्मा को प्रणाम कर कहा, ''महाराज पधारिए। मेरे योग्य सेवा बताइए।''

''मैं आपके घर भोजन करना चाहता हूं।'' महात्मा ने कहा।

''मेरा अहो भाग्य। पधारो महाराज जी।'' श्रद्धा से सतवीर ने कहा।

''किंतु भोजन करने से पहले आपसे दो बातें ज्ञात करनी हैं। आपके पास नेक कमाई का कितना रुपया है और आपके कितने पुत्र हैं?'' महात्मा ने पूछा।

सेठ सतवीर ने उत्तर दिया, ''महात्मा जी मेरे पास केवल नेक कमाई के पचास हजार रुपए हैं और केवल एक पुत्र है।'' गंभीरता से सेठ ने कहा।

सेठ सतवीर का उत्तर सुनकर महात्मा तुरंत बिना खाना खाए उठकर चल दिए। सेठ ने विनम्रता से पूछा, ''महाराज! बिना भोजन किए क्यों चल दिए। कृपया खाना खाकर जाएं।''

महात्मा ने रुष्ट होकर कहा, ''मैंने तुम्हें धर्मात्मा नेक कमाई वाला सच्चा आदमी समझा था। किंतु तुम तो महा झूठे निकले। क्या मैं तुम्हारे एक लाख रुपए और चार पुत्रों को बांट ले जाता। जो तुमने मुझसे झूठ बोला।''

सेठ सतवीर ने विनम्रता से उत्तर दिया, ''महात्मा जी! मेरा केवल एक पुत्र धर्म-कर्म परमार्थ में मेरी मदद और आज्ञा-पालन करता है। शेष तीन पुत्र शराबी कबाबी नालायक हैं। जो न होने के बराबर हैं। इसी कारण मैंने एक पुत्र बताया। दूसरे प्रश्न के उत्तर में महाराज! मैंने केवल पचास हजार रुपया धर्म कर्म परमार्थ में लगाया है। जो मेरा वही वास्तविक धन है।''

यह सुन महात्मा ने संतुष्ट हो भोजन कर सेठ सतवीर को आशीर्वाद दिया।

महात्मा ने सेठ सतवीर से प्रसन्न हो कहा, ''सेठ जी! तुम्हारा कथन यथार्थ सत्य है आज्ञाकारी पुत्र और परमार्थ में लगा धन ही वास्तव में अपना धन है। वास्तव में जो धन और सगा संबंधी परमार्थ और आपातकाल में मदद देता है, वही वास्तविक अपना है।''

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : देवशंकर नवीन
संपादकीय सहयोग : कमलेश कुमारी
उत्पादन सहयोग : प्रवीण कुमार कपिल

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया की ओर से श्रीमती नुज़्हत हसन द्वारा एस.एस. इंटरप्राईजेस, प्रथम तल, 10/8020 मुलतानी ढांढ़ा, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55 से टाईपसेट तथा अरावली प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, डब्ल्यू-30, ओखला फेज II, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित एवं ए-5 ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-110016 से प्रकाशित।